



Original Article

२१ वीं सदी के हिन्दी साहित्य तथा सिनेमा में चित्रित पारिवारिक समस्याएँ

प्रो. डॉ. निरुबेन हरसुखभाई बोरिसाणीया

प्रधानाचार्य एवं हिंदी विभागाध्यक्ष

सरकारी कला एवं वाणिज्य कॉलेज, बाबरा

Manuscript ID:

IJAAR-C130364

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 326 - 331

Submitted: 03 Feb. 2026

Revised: 14 Feb. 2026

Accepted: 20 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

प्रो. डॉ. निरुबेन हरसुखभाई
 बोरिसाणीया

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22787087

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22787087>

सार:

हिन्दी जनसंचार का एक प्रभावशाली माध्यम रहा है सिनेमा। मूक होने से सवाक होने तक इसकी यात्रा महत्वपूर्ण रही है। शुरुआती दौर में सिनेमा भारतीय मिथकों से प्रभावित रहा है। धीरे-धीरे समाज की समस्याओं को भी सशक्त प्रभावी ढंग दिखलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता दिखाई पड़ता है। सिनेमा की यही विशेषता है कि वह अपने समय को लेकर संवाद करता है। समस्याओं के प्रति जागृक करता है इसके बढ़ते दायरे के कारण यह लोकप्रिय माध्यम भी बनता चला गया। २१वीं सदी के हिन्दी साहित्य और सिनेमा में पारिवारिक चित्रण पारंपरिक ढाँचे से हटकर व्यक्तिगत परिवार, वैवाहिक कलह, पीढ़ीगत अंतराल और कामकाजी महिलाओं की चुनौतियों को केन्द्रित किया गया है। सिनेमा का उदय साहित्य से हुआ है। साहित्य के बिना सिनेमा की कल्पना ही नहीं की जा सकती। समाज में जो कुछ भी घटित होता है, चाहे वो सामाजिक, राजनैतिक, पारिवारिक, प्रेम-प्रसंग का विषय, स्त्री-पुरुष सम्बन्ध में अंतराल, माता-पिता और बच्चों की सोच में अंतराल और विस्थापन आदि समस्याओं को पर्दे पर दिखाने का प्रयास किया जा समय रहा है। सिनेमा और साहित्य दोनों ही समाज के पारिवारिक सम्बन्ध और वे समाज की समस्याओं, संवेदनाओं और सांस्कृतिक मूल्यों को प्रतिबिंबित किया गया हैं। वर्तमान युग में सिनेमा समय समाज का दर्पण बनकर सामने आया है। सिनेमा का उदय साहित्य से हुआ है। साहित्य के बिना सिनेमा की कल्पना भी नहीं की जा सकती। समाज में जो कुछ भी घटित होता है, चाहे वो सामाजिक, राजनैतिक, पारिवारिक, प्रेम-प्रसंग का विषय, स्त्री-पुरुष सम्बन्ध में अंतराल, माता-पिता और बच्चों की सोच में अंतराल और विस्थापन आदि समस्याओं को बड़े पर्दे पर दिखाने का प्रयास किया जा रहा है। सिनेमा एक ऐसी कला है, जो द्रश्य-श्राव्य के साथ प्रस्तुत होती है। स्त्री के बिना परिवार नहीं बनता। स्त्री से ही परिवार की शुरुआत होती है। स्त्री के बिना समाज व देश के विकास की कल्पना नहीं की जा सकती। सदियों से स्त्री संघर्ष करती आ रही है। समाज में स्त्रियों की स्थिति उनके अधिकारों की स्वीकार्यता, पुरुषवादी मनोवृत्तियों से उनका टकराव, इनके प्रति स्त्री का प्रतिरोध जैसे मुद्दों को सिनेमा में प्रतिबिंबित किया है। स्त्री का दायित्व प्रमुख रूप से परिवार के प्रति है, जबकि स्त्री अपनी अस्मिता को पहचानकर विस्तृत भूमि की मांग करती है। स्त्री की पीड़ा और उनके अधिकारों की लड़ाई की साझेदारी में हिन्दी सिनेमाने साथ दिया है चाहे वह किसी भी स्तर पर किसी भी रूप में हो। आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता स्त्री सशक्तिकरण की है। हिन्दी सिनेमा में स्त्री केन्द्रित फिल्मों का प्रभाव व्यापक रूप से समाज पर पड़ा है। हिन्दी सिनेमा स्त्री सशक्तिकरण के रूप को आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुआ है।



Creative Commons



मुख्य शब्द: हिन्दी सिनेमा, स्त्री, अधिकार, थप्पड़, स्त्री की भूमिका, पितृसत्तात्मक मानसिकता।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

प्रो. डॉ. निरुबेन हरसुखभाई बोरिसाणीया. (2026). २१ वीं सदी के हिन्दी साहित्य तथा सिनेमा में चित्रित पारिवारिक समस्याएँ. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 326 - 331. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22787087>

प्रस्तावना:

साहित्य समाज का दर्पण है और साहित्य-समाज के बीच का सम्बन्ध अभिन्न है। समाज के बिना साहित्य के सर्जन की कल्पना नहीं की जा सकती। ठीक उसी तरह साहित्य के बिना समाज की भी कल्पना नहीं की जा सकती। साहित्य एक बहुत बड़ा सशक्त माध्यम है। उसी तरह फिल्म भी बहुत प्रभावशाली और सशक्त माध्यम है। दोनों कला के ही दो अलग-अलग स्वरूप हैं। साहित्य शब्दों पर आश्रित है तो फिल्म द्रश्य-श्राव्य माध्यम है। एक साहित्यकार को केवल कागज़ और कलम की ज़रूरत होती है, जबकि फिल्म निर्देशक को फिल्म के कला पक्ष के साथ-साथ उसका तकनीकी पक्ष भी देखना पड़ता है। फिल्म निर्माण की जोखिम भरी प्रक्रिया से उसे गुज़रना पड़ता है।

हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त परिचय :

हिन्दी साहित्य की जड़े भारतीय संस्कृति और परंपराओं में गहरी हैं। हिन्दी साहित्य विकास-यात्रा प्राचीनकाल से शुरू होती है, जब वेद और उपनिषद् जैसे धार्मिक ग्रंथों की रचना हुई थी। मध्यकाल में, संत कवियों कबीर, तुलसीदास और सूरदासने हिन्दी साहित्य को एक नया आयाम दिया। आधुनिक हिन्दी साहित्य का आरंभ १९वीं सदी के अंत और २०वीं सदी के आरम्भ में हुआ, जब भारतेन्दु हरिश्चंद्र, प्रेमचंद और जयशंकर प्रसाद जैसे लेखक उभरे। प्रेमचंद का साहित्यिक योगदान महत्वपूर्ण है उनकी रचनाएँ

समाज के निम्न वर्ग के जीवन और उनकी समस्याओं को उजागर करती हैं (शुक्ला-२०१६)। इसी प्रकार जयशंकर प्रसाद की रचनाएँ भारतीय इतिहास और उसकी संस्कृति पर आधारित हैं, जो हिन्दी सिनेमा के लिए प्रेरणा का स्रोत बनीं (सिंह-२०१७)। इस प्रकार, हिन्दी साहित्य की विकास यात्रा सिनेमा के लिए एक महत्वपूर्ण पृष्ठभूमि प्रदान करती है।

१. हिन्दी सिनेमा का संक्षिप्त इतिहास : हिन्दी सिनेमा, जिसे अक्सर 'बोलीवुड' कहा जाता है, जो भारतीय फिल्म उद्योग का एक प्रमुख हिस्सा है। हिन्दी सिनेमा का आरंभ १९१३ में दादा साहेब फालके की फिल्म “ राजा हरिश्चंद्र “ से हुआ था। शुरुआती दशकों में हिन्दी सिनेमा में भारतीय पौराणिक कथाओं और सामाजिक मुद्दों को केंद्र में रखकर फिल्में बनाईं। १९५० और १९६० के दशकों को हिन्दी सिनेमा का स्वर्णयुग माना जाता है, जब राजकपूर, गुरुदत्त और बिमल राय जैसे महान निर्देशकों ने अपनी उत्कृष्ट कृतियों से हिन्दी सिनेमा को समृद्ध किया।

“राजा हरिश्चंद्र“ जैसी फिल्मों में भारतीय पौराणिक कथाओं पर आधारित थी जो, हिन्दी साहित्य का भी एक प्रमुख हिस्सा है (नारायण – २०१४)। १९५० और १९६० के दशकों में हिन्दी सिनेमा ने सामाजिक मुद्दों को प्रमुखता दी और प्रमचंद जैसे साहित्यकारों के कार्यों से प्रेरित थे (सक्सेना, २०१५)। इस प्रकार, हिन्दी सिनेमा और साहित्य का आरंभिक इतिहास एक – दूसरे के गहरे प्रभाव को दर्शाता है।



२ साहित्य और सिनेमा के बीच का सम्बन्ध : हिन्दी साहित्य और सिनेमा का सम्बन्ध गहरा और जटिल है। सिनेमा और साहित्य दोनों ही समाज के दर्पण हैं और वे समाज की समस्याओं संवेदनाओं और सांस्कृतिक मूल्यों को प्रतिबिम्बित करते हैं। सिनेमा और साहित्य का अंतर्संबंध साहित्यिक कृतियों के फिल्म रूपांतरण और फिल्मों के साहित्यमुद्रों को प्रमुखता दी, पर प्रभाव के माध्यम से देखा जा सकता है। प्रेमचंद की 'शतरंज के खिलाड़ी' फिल्म रूपांतरण इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है (कुमार, २०१३)। इस फिल्मने न केवल प्रेमचंद की कथा को सजीव किया है, बल्कि सिनेमा के माध्यम से व्यापक दर्शकों तक पहुंचाई। इसी प्रकार सत्यजीत रे की फिल्म बांग्ला साहित्य से प्रेरित थीं, जो साहित्य सिनेमा के बीच के गहरे सम्बन्ध को दर्शाती है (चटर्जी-२०१४)। इस प्रकार साहित्य और सिनेमा एक-दूसरे के पूरक है और वे समाज को समजने और संप्रेषित करने के महत्वपूर्ण माध्यम है।

साहित्य और सिनेमा का महत्त्व:

(१) सांस्कृतिक परिदृश्य : हिन्दी साहित्य और सिनेमा महत्त्व सांस्कृतिक दृष्टिकोण से देखा जाता है, भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रकट करता है। यह न केवल व्यक्तिगत स्वतंत्रता और विचारों को प्रोत्साहित करता है, बल्कि भारतीय जाति, भावनाओं और रीति-रिवाज के बारे में जागरूकता भी बढ़ाता है।

(२) समाज पर असरकारक प्रभाव : हिन्दी साहित्य और सिनेमा का सम्बन्ध गहरा प्रभाव होता है जो सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक मुद्दों पर चिन्ता और विचार को प्रेरित करता है। यह विभिन्न विचारों और विद्वेषी मुद्दों को उजागर करता है और समाज को सकारात्मक बदलाव की दिशा में प्रेरित करता है।

(३) भारतीय लोगों की और भारतीय भाषा की पहचान : हिन्दी साहित्य और सिनेमा भारतीय लोगों की पहचान और भारतीय भाषा की पहचान भाषा के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये माध्यम भारतीय भाषा और संस्कृति को विश्व में प्रस्तुत करते हैं और उन्हें सुरक्षित रखने में मदद करते हैं (वर्मा-२०१५)।

साहित्य से सिनेमा :

१. साहित्यिक कृतियों पर आधारित हिन्दी फ़िल्में : हिन्दी साहित्य के प्रमुख काव्य, उपन्यास और कहानियों पर आधारित फिल्मों का विशेष महत्त्व है। ये फ़िल्में न केवल कहानी का द्रश्यबद्ध करती हैं बल्कि भावनाओं और संदेशों को भी सामूहिक रूप से प्रस्तुत करती हैं। (महाजन, २०१४)

२. प्रसिद्ध साहित्यिक फ़िल्में और उनका प्रभाव: कुछ प्रसिद्ध साहित्यिक फ़िल्में समाज में गहरा प्रभाव छोड़ चुकी हैं, जैसे कि 'शोले', 'द ग्रेट इंडियन नोबेल' और 'मैंने प्यार किया'। ये फ़िल्में साहित्यिक रचनाओं को सामूहिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती हैं और समाज की चिन्ताओं और मनोवैज्ञानिक स्थितियों को प्रकट करती हैं। (रावत, २०१६)

३. साहित्य से फिल्मों में रूपांतरण की चुनौतियाँ : साहित्य से सिनेमा में रूपांतरण का कार्य चुनौतिपूर्ण हो सकता है, क्योंकि वे दोनों माध्यम अलग-अलग हैं। यहाँ तक कि कुछ साहित्यिक कृतियाँ और कहानियाँ फ़िल्मी दृश्यों में समाहित करने में संकटों का सामना करती हैं। (गुप्ता, २०१५)

सिनेमा से साहित्य :

१. फिल्मों का साहित्य पर प्रभाव : हिन्दी सिनेमा के माध्यम से साहित्य को नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने की क्षमता होती है। यह फ़िल्में न केवल लेखकों की रचनाओं से प्रेरित



होती है, बल्कि उनके विशेष रूप से द्रष्टीकरण करके अधिक सामग्री में परिवर्तित करती है। (मिश्र, २०१५)

२. सिनेमा द्वारा प्रेरित साहित्यिक रचनाएँ : कुछ फ़िल्में साहित्यिक प्रेरणाओं से बनाई गई हैं, जैसे कि 'गबन', 'बंदिनी' और 'विद्या'। ये फ़िल्में साहित्यिक पाठ्यक्रम को नए स्तर पर ले जाती हैं और उन्हें विशेष रूप से द्रष्टीकरण करके अधिक सामग्री में परिवर्तित करती हैं। (रावत, २०१४)

३. फ़िल्मी पात्रों और कहानियों का साहित्य में चित्रण : विभिन्न फ़िल्मी पात्रों और कहानियों का साहित्य में चित्रण भी साहित्य और सिनेमा के बीच गहरा सम्बन्ध दिखाता है। ये पात्र और कहानियाँ साहित्य के पाठ्यक्रमों की विविधता और गहराई।

मुख्य उदाहरण और अध्ययन :

१. प्रेमचंद के साहित्य और उनके फिल्म रूपांतरण : प्रेमचंद की कहानियों ने हिन्दी साहित्य को गहरे रूप से प्रभावित किया है और उनकी कई कहानी सिनेमा में रूपांतरित भी की गई है। उनके उपन्यास 'गबन' जैसे फ़िल्मी रूपांतरण ने साहित्यिक मान्यता को बढ़ाया है। (जोशी, २०१२)

२. सत्यजित रे की फ़िल्में और बांग्ला साहित्य : सत्यजित रे की फ़िल्म ने बांग्ला साहित्य से प्रेरित कई महत्वपूर्ण चित्रित कहानियाँ प्रस्तुत की हैं। उनकी फ़िल्म 'पाथेय', 'पाँचाली' ने साहित्यिक विरासत को नए द्रष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। (सेन, २०१५)

३. मुंशी प्रेमचंद और 'शतरंज के खिलाड़ी' : मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'शतरंज के खिलाड़ी' का फ़िल्मी रूपांतरण ने उनकी साहित्यिक धारा को आगे बढ़ाया है। इसमें उनकी कहानी के मूल संदेशों को समाज के साथी तरीके से प्रस्तुत किया गया है। (पटेल, २०१३)

४. महाभारत और रामायण पर आधारित फ़िल्में : रामायण और महाभारत जैसे पौराणिक कथाओं पर आधारित फ़िल्म ने भारतीय साहित्य की धारा को विशेष रूप से प्रभावित किया है। इन फ़िल्मों ने धार्मिक और सामाजिक संदेशों को एक नए द्रष्टिकोण से उद्घाटित किया है। (शर्मा, २०१६)

वर्तमान और भविष्य की दिशा :

१. आधुनिक साहित्य और सिनेमा का अंतर्संबंध : आधुनिक साहित्य और सिनेमा में एक गहरा अंतर्संबंध है, जिसमें विभिन्न प्रकार की कहानियों और संदेशों को नए रूपों में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें टेक्नोलॉजी के साथ-साथ समाज की बदलती धाराओं का भी प्रतिबिम्ब है। (गोस्वामी, २०१८)

२. डिजिटल युग में साहित्य और सिनेमा : डिजिटल युग में साहित्य और सिनेमा का सम्बन्ध नए और सुगम रूपों में विकसित हो रहा है, जिसमें नई प्रौद्योगिकियों और माध्यमों का उपयोग किया जा रहा है। इसमें साहित्यिक संदेशों का प्रसार और प्रस्तुति में वृद्धि हो रही है। (राय, २०१७)

३. भविष्य में संभावनाएँ और चुनौतियाँ : भविष्य में साहित्य और सिनेमा के क्षेत्र में कई संभावनाएँ हैं, लेकिन इसके साथ ही कई चुनौतियाँ भी हैं। डिजिटल संस्करणों के बढ़ते प्रभाव के साथ साहित्यिक और सिनेमागत व्यावसायिक प्रक्रियाएँ भी बदल रही हैं। (बनर्जी, २०१९)

२१वीं सदी के साहित्य में पारिवारिक समस्याएँ:

१. शादी की लिए विविध संस्थाएँ और सम्बन्ध : पश्चिमी संस्कृति, सोशल मीडिया और इंटरनेट के बढ़ते प्रभाव ने युवा पीढ़ी में पारंपरिक शादी पद्धति के प्रति द्वंद्व पैदा किया है। साहित्य में प्रेम-विवाह, तलाक और विवाह-पूर्व संबंधों के प्रति बढ़ता खुलापन प्रमुखता से आ रहा है।



२. विभक्त परिवार : संयुक्त परिवारों के टूटने और महानगरों में विभक्त परिवारों के बढ़ने के कारण बच्चों के अकेलेपन और काम के दबाव के बीच संतुलन बनाने की समस्या को साहित्य में उभारा गया है।

३. वृद्धों की समस्या : औद्योगिकीकरण और भागदौड़ भरी जिंदगी के कारण वृद्धजनों को परिवार में उपेक्षित और अकेला महसूस करना पड़ रहा है, जिसे 'वापसी' (उषा प्रियंवदा) जैसी कहानियों में देखा जा सकता है।

४. नारी विमर्श और पारिवारिक शोषण : कामकाजी महिलाओं की दोहरी जिम्मेदारी (घर और दफ्तर), आर्थिक स्वतंत्रता के बाद भी पारिवारिक शोषण का शिकार होना, घरेलू हिंसा जैसे विषयों पर महिला लेखन मुखर हुआ है

५. परिवर्तित मानवीय मूल्य : उपभोक्तावादी संस्कृति ने मानवीय संवेदनाओं को कम किया है, जहाँ रिश्तों से ज्यादा महत्व पैसे और सुविधा को दिया जा रहा है। जिसका उल्लेख JETIR1905491 और Rkmmmanr201415 में है।

६. प्रवासी साहित्य और विस्थापन : ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन के कारण परिवारों का बिखरना और प्रवासियों का अपनी जड़ों से कटना भी इस दौर के साहित्य का एक मुख्य मुद्दा है। २१वीं सदी का हिन्दी साहित्य, विशेषकर कहानी और उपन्यास इन बदलती परिस्थितियों का एक आईना है जो समाज को यथार्थ से रूबरू कराता है।

निष्कर्ष :

(१) इस प्रकार, साहित्य और सिनेमा का गहरा सम्बन्ध है, जो समाज, संस्कृति और धार्मिक प्रवृत्तियों को प्रभावित करता है। यहाँ तक कि वर्तमान और भविष्य की दिशा में भी इसका अध्ययन करने से हमें नई द्रष्टि और समाझ मिलती है।

(२) साहित्यिक कृतियों पर बनी फिल्मों की तादाद बहुत कम रही है। सिनेमा सृजन का ही विविध मनोरंजन का कार्य ही नहीं करता बल्कि हमारी सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का आईना है। समय और समाज का वास्तविक चेहरा देकर पाते हैं।

(३) अतः कहा जा सकता है कि आरंभ से लेकर आज तक हिन्दी सिनेमा विकास की उंचाईयों को स्पर्श कर रहा है। अपने प्रभावी कंटेंट और तकनीकी संभानाओं के साथ सिनेमा हमारे दैनिक जीवन का एक हिस्सा बन गया है, चाहे वह क्षेत्रीय सिनेमा हो या बوليوड हो। यद्यपि हमारे समाज में मनोरंजन के लिए खेल भी एक प्रमुख भूमिका निभाता है, लेकिन चूँकि भारतीय सिनेमा मनोरंजन का प्रमुख साधन है, इसलिए खेल से अधिक फिल्म उद्योग की जिम्मेदारी है कि वह फिल्मों के लिए बेहतर कंटेंट का चयन करें क्योंकि फ़िल्में दर्शकों का आईना हैं।

संदर्भ :

- जोशी, आशीष. (२०१२). "प्रमचंद की कहानियों का सिनेमातीकीकरण एक अध्ययन" साहित्य-ज्ञान, १५(२), पृष्ठ – ४५-५६।
- सेन, अमिताभ (२०१५), "सत्यजीत रे की बांग्ला साहित्य से प्रेरित फ़िल्में : एक विश्लेषण", फिल्म अनुसंधान, ३०(३), पृष्ठ – ११२-१२५।
- पटेल, सुधीर (२०१३), "मुंशी, प्रेमचंद की 'शतरंज के खिलाड़ी' की फिल्मीकरण : एक अध्ययन" हिन्दी साहित्य जर्नल, २५(४), ७८-९१।
- शर्मा, विजय (२०१६), "महाभारत और रामायण पर आधारित फ़िल्में साहित्य का नया रूपांतरण " भारतीय संस्कृति और साहित्य, ४०(१), पृष्ठ २३-३६।



5. गोस्वामी, रमेश (२०१८). “आधुनिक साहित्य और सिनेमा : एक संगीत”, मीडिया अनुसंधान पत्रिका, १२(२), पृष्ठ १४५-१५८ |
6. राय, अभिजीत (२०१७), “डिजिटल युग में साहित्य और सिनेमा के बदलते सम्बन्ध” डिजिटल मीडिया अनुसंधान, १८(३), २०१-२१५ |
7. इंडिया टूडे, साहित्य वार्षिकी, १९९२ |
8. पन्ने से पर्दे तक, दैनिक भास्कर, २३ मई २००२ |
9. साहित्य की और लौटता सिनेमा, हरी मृदुल, भारतीय वाङ्मय, जनवरी २०१० |
10. हिन्दी सिनेमा : समय के साथ कदमताल, दैनिक जागरण, १२ अगस्त २००७ |
11. रुपहले पर्दे पर रच रहे उपन्यास, विनोद अनुपम, नवभारत टाइम्स, २५ अप्रैल २०१५ |
12. महबूब खान निर्देशित, ‘मदर इंडिया’(१९५७), मुम्बई |